यथा-शुकनासस्यापि रेणुकायां तनयो जातः।

स स्वभार्यायां कन्यारत्नमजीजनत् ।

परदारेषु जायेते द्वौ सुतौ कुण्डगोलकौ (मनुस्मृतौ)

भुवः प्रभवश्च

प्रभव का अर्थ है-उत्पत्तिस्थान । उत्पन्न होने वाले का प्रभव अपादान होता है,

यथा-हिमवतः गङ्गा प्रभवति ।

ल्यब् लोपे कर्मण्यधिकरणे च वा०

जब क्त्वा प्रत्ययान्त अथवा ल्यप् प्रत्ययान्त क्रिया वाक्य में प्रकट नहीं की जाती, परन्तु छिपी रहती है तब उस क्रिया के कर्म और आधार पञ्चमी में होते हैं,

यथा

श्वशुराज् जिह्वेति (श्वशुरं वीक्ष्य दृष्ट्वा वा जिह्वेति- ससुर को देखकर लजाती है।)

ते उपविश्य स्थित्वा वा प्रेजते ।) आसन पर बैठकर

आसनात् प्रेक्षते (आसने उपविश्य स्थित्वा वा प्रेक्षते- आसन पर बैठकर देखता है)

उपर्युक्त उदाहरणों में दृष्ट्वा का कर्म "श्वसुर' में तथा उपविश्य के आधार आसन में सप्तमी न होकर पञ्चमी हुई है।

यतश्चाध्वकालनिर्माणं तत्र पञ्चमी। तद्युक्तादध्वनः प्रथमासप्तम्यौ। कालात् सप्तमी च वक्तव्या। वा॰

जिस स्थान या काल (समय) से किसी दूसरे स्थान या काल की दूरी दिखायी जाती है, वह स्थान या काल पञ्चमी में रखा जाता है और उस स्थान का वाचक शब्द प्रथमा या सप्तमी में रखा जाता है,

यथा-देवप्रयागात् रुद्रप्रयागः पञ्चदशयोजनानि पञ्चदशयोजनेषु वा।

यहाँ जिस स्थान से दूरी दिखायी गयी है वह 'देवप्रयाग' है, अतः वह पञ्चमी में रखा गया है और जितनी दूरी दिखायी गयी है वह 'पञ्चदश योजन' है. अतः 'पञ्चदश योजन' प्रथमा में अथवा 'सप्तमी' में रखा गया है।

साल (समय) की दूरी के वाचक शब्द में सप्तमी होती है,

यथा-राष्ट्रियपर्वात् महावीरजन्मदिवसः द्वादशदिवसेषु ।

कार्तिक्या मासे आग्रहायणी (कार्तिकी पूर्णिमा से अगहन की पूर्णिमा एक महीने में आती है।)

यहाँ 'कार्तिक्याः की दूरी दिखायी गयी है, अतः उसमें पञ्चमी हुई, महीने से (मासे) दूरी दिखाई गयी है, अतः उसमें सप्तमी हुई।

पञ्चमी विभक्ते

विभक्त का अर्थ है-भेद। तरप् या ईयसुन् प्रत्ययान्त विशेषण शब्दों द्वारा या साधारण विशेषण या क्रिया के द्वारा जिससे किसी वस्तु का तुलनात्मक भेद दिखाया जाता है, उसमें पञ्चमी होती है,

यथा-

धनात् ज्ञानं गुरुतरम् (धन से ज्ञान अच्छा है।)

देवात् रमेशः पटुतरः (देव से रमेश अधिक चतुर है।)

मौनात् सत्यं विशिष्यते (मौन से सत्य श्रेष्ठ है)।

वचनाद्रक्षणं श्रेयः तदभावे तदप्यसत् (बढ़ाने से रक्षा करना अच्छा है)

श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् (दूसरे के धर्म से अपना धर्म अच्छा है।)

पञ्चम्यपाङ्परिभिः। आङ् मर्यादावचने। अपपरी वर्जने।

अप, आङ् और परि के योग में चतुर्थी होती है। तक, जहाँ तक, मर्यादा अर्थ में 'आ' के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है,

यथा-आमूलाच्छ्रोतुमिच्छामि (आरम्भ से सुनना चाहता हूँ।)

आकैलासात् (जहाँ तक कैलास है।)

अव्ययीभाव समास बतलाने के लिए भी कभी-कभी 'आ' को संज्ञा-शब्दों के साथ जोड़ते हैं,

यथा -

आमेखलं संभ्रतां धनानाम् (मध्य भाग तक घूमते फिरते हुए बादलों के)

अप परि वा विष्णोः संसारः (भगवान् को छोड़कर अन्यत्र संसार रहता है।)

प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्

प्रतिनिधि तथा प्रतिदान (विनिमय) के अर्थ में प्रति के योग में पंचमी होती है।

कृष्णः पाण्डवेभ्यः प्रति (कृष्ण पाडवों के प्रतिनिधि हैं।)

तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान् (तिलों के बदले उड़द देता है)।